REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

हिन्द महासागर में भू राजनीति : एक विश्लेषण

क्षिप्रा भार्मा
व्याख्याता ,राजनीति विज्ञान, कानोडिया पी जी महिला महाविद्यालय ,जयपुर

सार–संक्षेप

हिंद महासागर वेसे तो प्राचीन समय से विभिन्न देशों के मध्य व्यापार व अन्य गतिविधियों के लिए प्रयोग में आता था। दक्षिण भारत के राजाओं ने अपना साम्राज्य दक्षिण पूर्व एशिया में भी इसी के माध्यम से स्थापित किया था। लेकिन वर्षो की अनदेखी के पश्चात् वैश्विकरण के दौर में 1990 के दशक से इसका महत्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से बढ़ा है। व्यापार के लिए इसने नये रास्ते प्रदान किये है। दक्षिणपूर्व एशिया व चीन से यूरोप,मध्य पूर्व एवं अफ्रीका को जोड़ने वाला सबसे महाशक्तियाँ इसमें रूचि लेने लगी है। परिणामस्वरूप हिन्द महासागर भू राजनीति का शिकार हो गया है। भारत,चीन एवं अमेरिका के त्रिभुज द्वारा यहाँ की भू राजनीति तय होती है तथा एक शक्ति संतुलन को बनाये रखने का प्रयास किया जाता है। श्रीलंका की भौगोलिक स्थिति सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है तथा उसे तीनों बड़े राष्ट्रो से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखने का दुष्कर कार्य भी करना पड़ता है।

संकेत शब्द

भू–राजनीति ,सामरिक शक्ति,वैश्विकरण,प्रतिस्पर्द्धा,नौपरिवहन।

परिचयात्मक

प्राचीन समय से हिंद महासागर पूर्व और पश्चिम को जोड़े वाले सागर के रूप में जाना जाता है। वैश्विकरण से पूर्व यानि 1990 के दशक से पूर्व हिंद महासागर अन्य समुद्रों जैसे प्रशान्त महासागर से सामरिक एवं आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नही था। वैश्विकरण एवं सोवियत यूनियन के पतन के साथ व्यापार सही अर्थो में अन्तर्रायष्ट्रीय बनने लगा। इसी के साथ–साथ व्यापार केवल जमीन की अपेक्षा समुद्र के रास्ते भी होने लगा। नये–नये सामुद्रिक रास्ते खोजे जाने लगे तथा विज्ञान एवं तकनीक का प्रयोग कर बड़े विशाल जलपोतों का निर्माण हुआ जिनमें एयरपट्टी बनायी गयी। बड़े–बड़े जहाजों में तेल व ऊर्जा के अन्य साधनों को आयात–निर्यात में काम लिया जाने लगा। नये रास्तों की खोज के साथ परिवहन के मूल्य को कम करने का प्रयास किया गया जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्रूापार में वृद्धि हूई । एक वैश्विक गांव की अवधारणा को साकार करने में सामुद्रिक व्यापार महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा। 2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हुए आक्रमण ने अमेरिका की विदेश एवं रक्षा नीति पर बहुत प्रभाव डाला। एकमात्र वैश्विक शक्ति के गर्व को इस हमले ने चकनाचूर कर दिया। उसने अपनी सुरक्षा की खामियों को ठीक किया तथा विदेश नीति में सुधार किया। विश्व में जिन रास्तों पर उसकी निगाह नही थी या जिन्हे वह महत्वपूर्ण नहीं मानता था उन पर भी वह ध्यान देने लगा। वह समुद्र के रास्तो पर भी निगरानी रखने की योजना बनाने लगा। इस प्रकार के कई कारणों से हिंद महासागर का महत्व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बढ़ने लगा।

हिंद महासागर प्राकृतिक स्त्रोत का भंडार भी था जिसे अब धीरे–धीरे खोजा जाने लगा। समुद्र तट में पाई जाने वाली जीवाश्म ईंधन के मिलने से आधुनिक विश्व में हिंद महासागर महत्वपूर्ण बनता गया। इसके माध्यम से तेलीय देश और तेल का उपयोग करने वाले देशो के मध्य व्यापार होने लगा। अफ़गानिस्तान और ईराक में लड़े गये युद्ध के परिणाम स्वरूप अमेरिका ने भी हिन्द महासागर को महत्वपूर्ण बनाया। पिछले कुछ

वर्षो मे वैश्विकरण के दौर में भारत व चीन के अधिक एवं सैनिक शक्ति में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण भी हिंद महासागर का महत्व बड़ गया। अमेरिका द्वारा 2011 में बनाई गई पुर्नसंतुलन की नीति के कारण भी हिन्द महासागर का महत्व बढ गया।हिंद महासागर के सैनिक एवं राणनीति दृष्टिकोण से स्थिति काफी जटिल है जिसमें कई शक्तियों का हस्तक्षेप होता है। यहाँ पर अमेरिका चीन व भारत जैसे महत्वपूर्ण देश भू–राजनीति की दिशा को तय करते है।

श्रीलंका एवं हिंद महासागर

इसी के साथ श्रीलंका भी सामरिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण देश है जिसका हस्तक्षेप हिन्द महासागर की भू–राजनीति में निरंतर रहता है। भारत,चीन और अमेरिका को इस क्षेत्र में **"रणनीति त्रिभुज"** की अवधारणा से जाना जाता है। **हेरी हार्डिंग[1] के** अनुसार तीनों देशो का एक–दूसरे के प्रति महत्व इतना है कि इनमें से किन्ही दो देशो की शक्ति संतुलन बिगड़ने से तीसरे के हितों पर भी प्रभाव पड़ता है। ये त्रिकोणात्मक संबंध कम से कम चार प्रकार का हो सकता है–1. सभी मिलजुल कर 2.दो एक के विरूद्ध 3.सभी,सभी के विरूद्ध और 4. दो के संघर्ष में तीसरे का समझौता कराना। इसी प्रकार का त्रिकोणात्मक सामरिक संबंध शीत युद्ध के दौरान अमेरिका,सोवियत यूनियन और चाइना के मध्य था। **हार्डिंग[2]** के अनुसार इसे ही भारत,अमेरिका और चीन के संबंधों पर लागू किया जा सकता है। उसके अनुसार भारत को आजादी मिलने के साथ चीन ने भी साम्यवाद अपनाया और अमेरिका एशिया के क्षेत्रीय सुरक्षा को लेकर चिंतित हुआ। इसके बाद से ही इनमें से हर देश की नीति को प्रभावित किया है ।

21वी शताब्दी में चीन एवं भारतीय शक्ति में अभूतपूर्व विकास के साथ ही ये संबंध बराबरी के हो गये है। **रॉबर्ट काप्लान[3]** के अनुसार हिन्द महासागर वो जगह है जहाँ पर प्रशान्त महासागर में अमेरिका एवं चीन की शत्रुता भारत व चीन के मध्य की क्षेत्रीय शत्रुता से जोड़ती है। वह मानता है कि चीन दक्षिण में हिन्द महासागर में अपने प्रभाव का विस्तार कर रहा है व करेगा। भारत हिन्द महासागर के पूर्व व पश्चिम में समान रूप से विस्तार करने का प्रयास कर रहा है। भारत हिन्द महासागर के पूर्व व पश्चिम में समान रूप से विस्तार करने का प्रयास कर रहा है। वही अमेरिका यहां पर अन्य समुद्री क्षेत्र की तरह अपने नेतृत्व को बनाये रखने की कोशिश कर रहा है। जिससे की दुनिया भर के समुद्रों के समुद्र व्यापार बिना किसी बाधा के जारी रह सके। ऐसा नही है कि हिन्द महासागर में दूसरी सामरिक शक्तियां प्रभाव नही जमाना चाहती है (जैसे दक्षिण कोरिया , इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया) लेकिन अमेरिका,चीन और भारत का त्रिकोण ही सर्वाधिक प्रभाव रखने वाला है। **राहुल सिंह[4]** के अनुसार एकीकृत रक्षा स्टाफ रिपोर्ट कहती है कि चीन की हिन्द महासागर में बढ़ती गतिविधियाँ भारतीय हितों के लिए गंभीर खतरा संस्थापित कर रही है। भारत ये मानता है कि चीन के द्वारा हिन्द महासागर में अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास अन्ततोगत्वा सामरिक दृष्टि से भारत को चारो तरफ से घेरता है इसलिए वह चीन के इस क्षेत्र के दूसरे देशों के बढ़ते संबंण्धो को संदेह की दृष्टि से देखता है। अमेरिका इस क्षेत्र में चीन के साथ सहयोगात्मक संबंध रखने के साथ–साथ प्रतिस्पर्धात्मक संबंध रखने का कार्य भी करता है। जैसे– वह चीन को समुद्री लुटेरों के विरूद्ध कार्यवाही करने को प्रोत्साहित करता है लेकिन चीन के नौ सैनिक शक्ति के बढ़ाव पर नजर रखता है। आपस में मतभेद होने पर भी ये तीन देश क्षेत्रीय संतुलन बनाये रखना चाहते है और समुद्री लुट जैसे–सुरक्षा के खतरे के विरूध मिलकर काम करना चाहते है। श्रीलंका इस क्षेत्र की एक छोटी शक्ति है और इसलिए उसे इन तीन बड़े राष्ट्रो के सामरिक प्रभुत्व को स्वीकार कर अपने हितों की रक्षा करनी चाहिए। श्रीलंका अमेरिका के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योकि वह नौ परिवहन के लिए उसे स्वतंत्रता देता है।

श्रीलंका सामरिक रूप से भी हिंद महासागर में महत्हवपूर्ण जगह पर स्थित है। यह पश्चिम में बेब–अल–मण्डेब,ओर्मुज चैनल को पूर्व की मलक्का की धारा से जोड़ता है। चीन के लिए श्रीलंका सामरिक दृष्टि से दो प्रकार से महत्वपूर्ण है–1. चीन की ऊर्जा के जहाज मध्य–पूर्व व अमेरिका जाने के लिए इसी सी–लिंक से गुजरते है जो श्रीलंका मे नियंत्रण मे है। 2. श्रीलंका चीन के जहाजो के बीच का बिन्दू है जो अफ्रीका के साथ चीन के बढ़ते व्यापार के लिए महत्वपूर्ण बनता जा रहा है। भारत के लिए श्रीलंका सामरिक रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योकि वह इसके दक्षिण–पश्चिम एवं दक्षिण–पूर्व समुद्री तटों की सुरक्षा के लिए सामरिक रूप से महत्वपूर्ण है इसलिए भारत श्रीलंका के किसी भी अन्य राष्ट्र से सैनिक संबंधों के बढ़ने से चिन्तित होता है।

श्रीलंका भी दूसरी तरफ इन तीन बड़े राष्ट्रो के आपसी संबंधों में उतार–चढाव से प्रभावित होता है और सुरक्षा व राष्ट्रीय हितों को लेकर चिन्तित है। श्रीलंका के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती इस बात की है कि ये तीनों राष्ट्र अपने–अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए श्रीलंका को अपना अनुयायी बनाते रहने का प्रयास करते रहते है और वह इन राष्ट्रो के शक्ति संबंधो में उलझ कर रह जाता है। श्रीलंका का यह प्रयास रहता है कि वह अपनी इस भू राजनीतिक स्थिति का उपयोग सामरिक दृष्टि से अपने हितों को बढ़ाने में करे तथा अपनी विदेश नीति की स्वायत्तता समाप्त न करें। वह तीनों देशो को यह समझाने का प्रयास करता रहा है कि श्रलंका की वेदेशिक स्वायत्तता तीनों देशो के हितों में भी है।

चीन एवं हिन्द महासागर

आरम्भ में चीन हिन्द महासागर में ज्यादा उत्सुक नही था और वह पश्चिमी प्रशान्त महसागर तक ही सीमित था। उसमें भी उसका हत छोटे भू–भागो पर नियंत्रण करना तथा दक्षिण चाईना समुद्र में निगरानी रखने तक सीमित था। चूंकि चीन एवं कमजोर नौसेनाएँ समाजवादी आर्थिक व्यवस्था और व्यापार की कमजोर परम्परा से ग्रसित था । इसलिए वह समुद्री राजनीति में अधिक दिलचस्पी नही ले रहा था। वैश्विकरण के बाद आर्थिक विकास चीन का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर बढ़ती निर्भरता,प्राकृतिक स्त्रोतो पर नियंत्रण करने की लालसा,तथा आयातित शक्ति स्त्रोतो पर बढ़ती निर्भरता ने चीन की नौ सैनिक शक्ति में अप्रत्याशित वृद्धि की और हिन्द महासागर में चीन नेतृत्व की रूचि हुई। **जहु–क्यूइपिंग**[5] के अनुसार हिन्द महासागर में अमेरिका अपनी उपस्थिति लम्बे समय से बनाये हुये है(पर्सीया की खाड़ी और डीआगों गार्सीया बेस में),और भारत यहाँ की प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति है। चीन का इस क्षेत्र में विकास हाल का विकास है। इसी प्रकार से भारत की भूमिका भी सीमित रही थी। भारत भी स्वतंत्रता के पश्चात् वर्षो तक मिश्रित अर्थव्यवस्था,सीमित व्यापारिक गतिविधियों तथा अपने लम्बे भूमि की सीमाओं की सुरक्षा की चिंता में व्यस्थ रहा और इसलिए समुद्र की तरफ उसका ध्यान भी ज्यादा नही गया।

1991 में वैश्विकरण के प्रभाव से भारत की अर्थव्यवस्था में उदारीकरण को स्वीकारा और धीरे–धीरे भारत में अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण व्यवस्था से संयुक्त होती गई। परिणाम स्वरूप हिन्द महासागर में भारत का हस्तक्षेप बढ़ता गया। भारत की नौ सेना में भी निरंतर रूप से वृद्धि होती गई जिससें समुद्र में विशेषकर हिन्द महासागर में भारत की हलचल बढ़ गई। अमेरिका हिन्द महासागर में एक स्थानीय नौ सैनिक शक्ति कें रूप में तभी से विद्यमान था जब से ब्रिटेन ने हिन्द महासागर से अपनी सेनाएँ हटा दी। अमेरिका की रूचि हिन्द महसागर में सामरिक दृष्टि से और बढ़ गई जब सोवियत युनियन ने अफगानिस्तान पर आक्रमण किया। इसी कारण 1980 के दशक में डिआगो गार्सीया नौ सैनिक केन्द्र को मजबूर करने तथा रेपीड डेपलोईमेंट फोर्स के निर्माण के साथ अमेरिका हिन्द महासागर में एक सक्रिय सैनिक शक्ति के रूप में उबरा।शीत युद्ध की समाप्ति सोवियत यूनियन के पतन तथा भारत व चीन द्वारा अमेरिका को किसी प्रकार की चुनौति न दे सकने की स्थिति में अमेरिका हिन्द महासागर में सक्रियता कम करने लगा। इसका अर्थ ये नही था कि अमेरिका हिन्द महासागर में रूचि खो चुका है। चीन व भारत की बढ़ती राजनीतिक शक्ति के कारण अमेरिका हिन्द महासागर में अपनी स्थिति को स्वतः ही मजबूत बने रहने की कल्पना नही कर सकता था। 2010 में पेंटागन ने एक स्पष्ट हिन्द महासागर की नीति बनाने का आवह्रान किया है जो सैनिक एवं गैर सैनिक संगठनों को सम्मिलित कर एकीकृत दृष्टिकोण पर आधारित हो। हालांकि यह है कि हिन्द महासागर में होने वाली कोई भी हलचल अमेरिकी हितों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नही करती लेकिन पूरे विश्व पर नियंत्रण करने की उनकी ईच्छा के अनुरूप वह हिन्द महासागर पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण रखना चाहता है। वह यह जानता है कि ईरान की खाड़ी का प्यूल पूर्व एशिया जिसमें चीन भी सम्मिलित है जिसमें 75 प्रतिशत ऊर्जा स्त्रोतों के काम में आता है और इसलिए ईरानी खाड़ी एवं पूर्वी एशिया के देशों के मध्य नौ परिवहन में किसी भी प्रकार की बाधा एक बड़ी राजनीतिक समस्या खड़ी कर सकती है। इस कारण अमेरिका का हिन्द महासागर में रूचि लेना स्वाभाविक है। वह चीन को भी यह संदेश देना चाहता है कि उसकी हिन्द महासागर में बढ़ती शक्ति को रोका जा सकता है तथा दूसरी तरफ चीन भी हिन्द महासागर पर निर्बाध नौ परिवहन चाहता है जिसकी सुरक्षा की गारन्टी अपने प्रभुत्व से कर सकता हो।

नये प्रकार की चुनौतियों का समाना करने के लिए अमेरिका में नवम्बर 2011 से एशिया से संबंधित एक नई रणनीति की घोषणा की है जिसमें **'ईण्डो फेसिफीक'** नामक नई अवधारणा दी है। अमेरिका के अनुसार यह क्षेत्र अमेरिका के पश्चिमी तट से हिन्द महासागर के जल तक फैला है और सामारिक दृष्टि से दोनों महासागरों को जोड़ता है जो निरन्तर रूप से जहाजों के आवागमन से जूझ रहा है। भारत बहुत वर्षो तक अपने समुद्र के प्रति उदासीन रहा और इसका बहुत बड़ा कारण यह था कि भारत ने अपनी स्वतंत्रता के पहले 25 वर्षो में अपने पडौसी देशों से 4 जमीनी युद्ध लड़े । ऐसी स्थिति में उसका पूरा ध्यान जमीनी सीमाओं की रक्षा करने में लगा और वह एक नौ सैनिक रणनीति का विकास नही कर पाया। 1990 के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन हुये ,1990 के दशक में भारत व पाकिस्तान में आणविक शस्त्रो के निर्माण, 2001 के बाद आतंकवादियों की बढ़ती कार्यवाही तथा विदेश से ऊर्जा स्त्रोतो की बढ़ती मांग के फलस्वरूप भारत का ध्यान हिन्द महासागर की तरफ गया। इस कारण धीरे–धीरे भारत ने अपनी नौ सेना को मजबूत किया। फलस्वरूप वर्तमान में भारत हिन्द महासागर को अपने आर्थिक जीवन रेखा तथा सामरिक हितों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण भाग मानता है। भारत की तरह चीन ने भी हिन्द महासागर पर अपना ध्यान देना तब आरम्भ किया जब उसका अफ्रीका में आर्थिक हस्तक्षेप बढ़ने लगा और विदेश से ऊर्जा स्त्रोतो की मांग बढ़ने लगी। उदारणार्थ – चीन, ग्लफ कॉपरेशन कॉउन्सिल के मध्य व्यापार 2010 में 92.2 बिलियन डॉलर था जो 2012 में 155 बिलियन डॉलर हो गया। जैसे – चीन में शहरीकरण की प्रक्रिया बढ़ी और तेल की मांग बढ़ने लगी , और एक अनुमान के अनुसार यह 2030 तक दोगुनी हो जायेगी।

चीन ने अफ्रीका में भी अपने व्यापारीक संबंधो को मजबूत किया है। इसके 54 अफ्रीकन देशों में से 50 के साथ कूटनीतिक संबंध है। जहाँ अमेरिका 2001 के पश्चात् अफगानिस्तान में अलकायदा से लड़ने में व्यस्थ था। वही चीन धीरे–धीरे अफ्रीका में असीमित प्राकृतिक स्त्रोतो को ध्यान में रखते हुये संरचनात्मक परियोजनाओं जैसे हवाई अड्डे ,सड़के,रेल और अन्य पर बड़ी संख्या पर धन लगाना आरम्भ किया। 2009 के आते–आते चीन अमेरिका की अपेक्षा अफ्रीका का सबसे महत्वपूर्ण व्यापारीक सहयोगी बन गया । चीन के अफ्रीका में हस्तक्षेप एवं गल्फ कॉर्पोरेशन कॉन्सिल पर निर्भरता ने हिन्द महासागर में चीन की रूचि बढ़ा दी है और इसी कारण चीन की नौ सेना हिन्द महासागर में अपने हितों की रक्षा करने के लिए नये सिद्धान्त एवं रणनीति बनाने लगी।

शिएटिगी बाजपेई[6] के अनुसार पश्चिमी गल्फ एवं अफ्रीका के साथ तेजी से बढ़ते आर्थिक संबंध तथा सामुद्रिक सुरक्षा के बढ़ते महत्वप के संदर्भ में चीन के नौसैनिक सिद्धान्त नजदीकी तट बन्धी सुरक्षा से दूरगामी सामुद्रिक कार्यप्रणाली में परिवर्तित हो गये है। इस प्रकार तीनों महत्वपूर्ण शक्तियों की वर्तमान समय में हिन्द महासागर में अपने प्रभाव को बढ़ाने में रूचि रखती है क्योकि इससे उनके राष्ट्रीय हितो की रक्षा होती है तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे नौ परिवहन का स्थान महत्वपूर्ण होने के कारण हिन्द महासागर महत्वपूर्ण बनता जा रहा है। इसमें शान्ति बनाये रखना ,एशिया में उबरते शक्ति संतुलन बनाये रखना ,निर्भरता के लिए आवश्यक है। 2015 में हिन्द महासागर एवं इण्डो फेसिफिक क्षेत्र से तेल निर्यात एवं सामान के लगभग 70 प्रतिशत वैश्विक व्यापार इस रास्ते से गुजरते है। किसी भी प्रकार के गैर कानूनी हस्तक्षेत्र जैसे–समुद्री लुटेरों ,आतंकवादीयों के द्वारा इसमें बाधा पहुँच सकती है। चीन ने सबसे पहले इस क्षेत्र मे कराची,कोलम्बो एवं चिटगांव के बन्दरगाह पर अपनी मेल–जोल बढ़ाई है। यह 1958 का समय था। 2008 तक आते–आते वह सक्रिय रूप से समुद्री लुटेरों के खिाफ होने वाले अभियानों में हिस्सेदारी करने लगा। दो साल पश्चात् चीन के नौ सैनिक बेडे ने बांग्लादेश ,किनीया,सेशल्स ,तंजानिया जैसे देशो में मानवतावादी मिशन भी आरम्भ किये। इस प्रकार के नौ सैनिक गतिविधियों से चीन हिन्द महासागर में अपना अनुभव बढ़ा रहा है जो उसको आने वाले समय में अपनी शक्ति बढ़ाने में मदद करेगा। भारत इस बात से चिन्तित है कि कही चीन मोतियों की माला कि नीति के आधार पर श्रीलंका,म्यांमार और पाकिस्तान में विकासवादी प्रोजेक्ट में सहायता दे रहा है। जिससे की भारत की घेराबंदी की जा सके। श्रीलंका व चीन विशेष रूप से अपने आर्थिक संबंधों को बढ़ाने में लगे हुये है। हालांकि अभी चीन की गतिविधियां भारत व अमेरिका की संयुक्त गतिविधिकयों से बहुत कम है लेकिन उसकी गतिविधियों से उसके इरादे स्पष्ट होते है। चीन का नौ सैनिक बेडा "पीस आर्क" चिकित्सा सहायता संबंधी सहायता प्रदान करता है और इसने पाकिस्तान ,इण्डोनेशिया व मालद्वीव जैसे देशों में नागरिकों को सफलतापूर्वक चिकित्सकीय सुविधा पहुँचाई है। इस प्रकार धीरे–धीरे चीन आर्थिक सहायता व मानवतावादी सहायता करके हिन्द महासागर में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।

यहाँ हिन्द महासागर क्षेत्र में 51 देश है जिनमें से 28 देश हिन्द महासागर की सीमा से संबंधित है,10 देश लाल सागर एवं ईरानी खाड़ी से संबंधित है तथा 13 अन्य देश वो है जिनका हिन्द महासागर में कोई बन्दरगाह नही है। इनमे से 19 प्रतिशत में किसी न किसी प्रकार का गैर परम्परागत सुरक्षा घटनाएँ एवं सैनिक संघर्ष होते रहे हैं। 31: देशो में आतंकवादीयों की दमकीयो का सामना करना पड़ा है। 53: देशों में अभी भी नौ परिवहन की सीमाओं संबंधी विवाद अपने पडोसी देशो से हैं और 56: देशो में गैर कानूनी ढंग से व्यक्तियों ,ड्रग्स एवं हथियारों का आयात–निर्यात होता है । इन सब कारणों से चीन के नौ परिवहन को खतरा उत्पन्न होता है और वह इसके प्रति सचेत हैं।

भारत, चीन, अमेरिका त्रिभुज एवं हिन्द महासागर

जॉन हॉर्नेट[7] के अनुसार हिन्द महासागर अतीत में प्रभुत्व व नियंत्रण हेतु साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता का साक्षी रहा है और महाशक्ति संघर्ष क्षेत्र बना रहा है जो उत्तर शीत युद्ध काल में और तीव्र हो गया। अमेरिका ,भारत व चीन यहाँ अपने–अपने भू–राजनीतिक,भू–आर्थिक व विदेश नीति के उद्देश्यों के कारण रणनीतिक चालों में उलझे हुये है। **सी राजामोहन**[8] के अनुसार हिन्द महासागर में रूस,जापान,फ्रांस के साथ–साथ दक्षिण कोरिया ,इण्डोनेशिया ,ऑस्ट्रलिया और ईरान जैसे खिलाड़ी मौजूद है लेकिन भारत,चीन व अमेरिका के आपसी संबंध इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण सामरिक त्रिकोण है। यहाँ चीन और अमेरिका के संबंध भी निरंतर परिवर्तनशील है। जहाँ एक तरफ अमेरिका एक स्थापित विश्वशक्ति है वही चीन एक उबरती हुई विश्वशक्ति है। दोनो अपनी आर्थिक स्थित को बनाये रखने और बढ़ाने के लिए एक–दूसरे पर अन्तरनिर्भर है। अमेरिका चीन व्यापार जो 1981 में 5 बिलियन डॉलर था वह 2012 में बढ़कर 536 बिलियन डॉलर हो गया।

वर्तमान में चीन अमेरिका का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारीक सहयोगी है तथा तीसरा सबसे बड़ा आयात का बाजार है। इस प्रकार के बढ़ते हुये व्यापारिक संबंधो के संबंध में क्या हमें यह मानना चाहिए कि भारतीय हिन्द महासागर में इन दोनों का सहयोग अनिवार्य है। लेकिन हमें यह नही भूलना चाहिए कि दानों देशो के मध्य विचारधारा ,राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति तथा संस्कृति में समरूपता नहीं है और इस कारण चीन का बढ़ता प्रभुत्व अमेरिका को रास आये यह आवश्यक नहीं है। चीन भी इसी प्रकार अमेरिका के इरादो के प्रति सशंकित है। चीन ,अमेरिका व भारत के बढ़तें संबंधो को लेकर भी चिंतित है। वह अमेरिका द्वारा पुर्नसंतुलन की नीति को संदेह की दृष्टि से देखता है तथा भारत को हिन्द महासागर को सबसे महत्वपूर्ण सामरिक देश मानने से इनकार करता है। इस प्रकार अमेरिका ,चीन और भारत में से किन्ही दो देशो में बढ़ते संबंध को तीसरा देश नाराजगी से देखता है। चीन और अमेरिका में बढ़ते व्यापार संबंधी संबंध चाहे कितने भी प्रगाढ़ हो जाये वे हमेशा शक्ति संतुलन की दृष्टि से संदेहास्पद बने रहते है। अमेरिका जहाँ चीन की सामुद्रिक शक्ति की वृद्धि को उचित नही मानता वही चीन अमेरिका की हिन्द महासागर में सामुद्रिक नीति का आलोचक है। अमेरिका अपनी सामुद्रिक नीति के क्रियान्वयन के लिए भारत व श्रीलंका के अलावा आस्ट्रेलिया,दक्षिणी कोरिया व फिलिपिंस का उपयोग भी करता है। उसने एशिया फेसिपिक क्षेत्र में कई देशो से सुरक्षा संबंधी समझ भी विकसित कर रखी है। यह दूसरी बात है कि हिन्द महासागर के तटवर्ती देश अमेरिका की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति को स्वीकार नही करते इसलिए अमेरिका हिन्द महासागर के मध्य में कोई बड़ा सैनिक अड्डा बनाने में विफल रहा है। डी आगों गार्सीया तथा 5$^{जी}$ फिलीन जो कि बहरीन में स्थिति है। उसी से सुरक्षा संबंधी कार्य करता है। 1970 व 80 के दशक में भारत में हिन्द महासागर को शीत युद्ध के बढ़ते प्रभाव के कारण विश्वशक्तियों को आपसी प्रतिस्पर्द्धा का स्थान बनाने का निरंतर विरोध किया।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारतीय विदेश नीति में अमेरिका के प्रति बदलाव आता है और वह अमेरिका से मृदु संबंध बनाने पर बल देता है। इसी कारण 1990 के आरम्भ में भारत व अमेरिका के संयुक्त नौ सैनिक अभ्यास आरम्भ हुये जो समय के साथ–साथ आकार विस्तारित होते गये। इसी के साथ–साथ भारत में अमेरिका के मित्र देश जापान व ऑस्ट्रेलिया के संग भी नौ सैनिक अभ्यास किये है। भारत व जापान के बढ़ते संबंधों के कारण चीन सशंकित हो रहा है। **वेन डाओ**[9] के अनुसार चीन की हिन्द महासागर के संबंध में बदलती धारणा का मुख्य कारक भारत के इस क्षेत्र में अमेरिका व जापान के साथ बढ़ते संबंध है। भारत अमेरिका व जापान के बीच वास्तविक रक्षा सहयोग,संभावनाए उसके लिए चिंता का विषय है और अमेरिका का गुप्त उद्देश्य भी भारत व चीन की शत्रुता को उत्तेजित करना है।

2013 में आस्ट्रेलिया की डिफेन्स के व्हाइट पेपर में भारत को एक वैश्विक शक्ति माना गया है। जो कि हिन्द महासागर में प्रमुख भूमिका निभाने में सक्षम है। चूंकि आस्ट्रेलिया भी अपने व्यापार एवं सामरिक दृष्टि से हिन्द महासागर में अपनी पहुँच बढ़ाना चाहता है। इसलिए यह भारत से सामरिक सहयोग एवं हिस्सेदारी करना चाहता है। अमेरिका और उसके सहयोगी देश भारत के साथ हिन्द महासागर के संदर्भ में मधूर संबंध रखना चाहते है। चीन और भारत ऐतिहासिक रूप से कभी भी समुद्र में एक–दूसरे के विरोधी नही रहे है। 1980 के मध्य से चीन ने हिन्द महासागर में रूचि लेनी आरम्भ की। हालांकि अभी तक चीन हिन्द महासागर में अपनी नौ सैनिक शक्ति बढ़ाने व स्थापित करने की बात खुलकर नहीं कर रहा है लेकिन वह पाकिस्तान और श्रीलंका के स्थापित संरचनाओं और बन्दरगाहों का उपयोग कर रहा है तथा बांग्लादेश एवं म्यांमार में भी ऐसा करने की सोच रहा है। इसलिए यह संदेह गाढ़ा हो जाता है कि चीन भारत को मोतियों के हार की रणनीति के आधार पर घेरना चाहता है। दूसरी तरफ चीन इस बात को स्वीकार करते हुये संदेह व्यक्त करता हे कि अमेरिका ,भारत,वियतनाम,फिलिपींस व जापान की मदद से घेरना चाहता है। यह स्पष्ट है कि भारत एवं चीन दोनों ऐतिहासिक कारणों से एक–दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना रखते है।

सी राजामोहन[10] के अनुसार पिछले दशक में चीन ने हिन्द महासागर क्षेत्र में पूंजी निवेश बढ़ाया है तथा सुरक्षा गतिविधियों को तीव्रता प्रदान की है जिससे भारतीयों में चीन की दूरगामी मन्तव्य और समुद्रिक क्षेत्र में भारत–चीन की प्रतिस्पर्द्धा की संभावना का भय पड़ गया है। जहाँ भारत हिन्द महासागर में चीन के आगमन को संदेह की दृष्टि से देखता है वही चीन भारत के दक्षिणी चीन समुद्र में उपस्थिति का स्वागत नहीं करता। भारत और चीन के मध्य सामरिक सहयोग के लिए आवश्यक स्थिति दोनो के अपनी निष्ठा एवं सम्मान के सिद्धान्तों पर आधारित है। चीन ने हिन्द महासागर में तेल के कुएँ खोदने की अन्तरराष्ट्रीय इजाजत ले ली है और भारत चीन के इस अधिकार का सम्मान करता है लेकिन भारत द्वारा दक्षिणी चीन समुद्र के किसी गतिविधि के लिए स्वीकृति नहीं मिली है।

भारत चीन संबंध तभी आपसी सहयोग एवं निष्ठा पर आधारित हो सकते है ,जब दोनों अन्तरराष्ट्रीय में एक–दूसरे के अधिकारों का सम्मान करें। वर्तमान में ऐसा नही है। भारत और चीन के संबंधो में अविश्वास इस बात मे भी बढ़ रहा है कि यह एक तरफ भारत ,अमेरिका वियतनाम और जापान से नौसैनिक संबंधों में वृद्धि कर रहा है तथा वियतनाम के भी नजदीक जाने का प्रयास कर रहा है। वही दूसरी तरफ चीन द्वारा पाकिस्तान के बन्दरगाहो का वाण्जिक प्रयोग करना इत्यादि भी यह अविश्वास घटाने में सहायक नही होगें। चीन द्वारा हिन्द महासागर में वैश्विक तेल सप्लाई पर अपना नियंत्रण बढ़ाने की कोशिश करना तथा दक्षिण एशिया के देशों को उनमें सैनिक एवं सामरिक नीतियों में सहायता करना न केवल भारत एवं अमेरिका को चीन सशांकित कर रहा है। भारत चीन संबंध सुधारने के लिए दोनों द्वारा अदन की खाड़ी में समुद्री लुट के विरूध संयुक्त कार्यवाही करने से हुआ है। भारत के सामने हिन्द महासागर में सबसे बड़ी समस्या है कि अमेरिका और चीन के मध्य कैसे संतुलन रखा जाये। चीन का मुकाबला करने के लिए भारत अमेरिका के ज्यादा नजदीक जा सकता है और वह उसके लिए चिन्ता की बात होगी। पिछले कुछ वर्षो में चीन नें हिन्द महासागर मे अपनी उपस्थिति बढ़ाई है तथा भारत ने हिन्द महासागर में नेता की भूमिका को निभाने से मना कर दिया है। इस कारण भारत की स्थिति स्पष्ट नही है।

यह कहा जा सकता है कि पिछले कुछ वर्षो में भारत, चीन एवं अमेरिका के मध्य सहयोग मे वृद्धि हुई है ओर यह वृद्धि मुख्यतः व्यापारिक कारणों से आने वाले वर्षो में होती रहेगी। इसी प्रकार इस बात की कोई संभावना नही है कि हिन्द महासागर या दक्षिणी चीन महासागर में तीनों देशों के मध्य किसी प्रकार का नौसैनिक संघर्ष होगा लेकिन फिर भी हिन्द महासागर में तीनों देशों की भूमिका काफी जटिल हैं। इसका मुख्य कारण ये है कि जहाँ एक तरफ अमेरिका शक्ति होने के नाते यथा स्थिति बनाकर रखने में उत्सुक है। चीन उबरती हुई शक्ति होने के कारण यथा स्थिति को समाप्त कर एक नये संतुलन को जन्म देना चाहता है। भारत इन दोनो के इन प्रयासों कें मध्य स्वयं को वैश्विक शक्ति बनाने में लगा हुआ है। अमेरिका की दृष्टि से हिन्द महासागर का महत्व इस बात में है कि वह वैश्विक नौ परिवहन को सुचारू रूप गतिमान रखे। विशेष रूप से ऊर्जा स्त्रोतो से लदे जहाज बिना किसी बाधा के इस क्षेत्र में विचरण कर सके। इसके लिए वह ईरान के द्वारा बार–बार होर्मुज की खाड़ी को बन्द करने की धमकी का उपाय करें तथा समुद्री लुटेरो से उत्पन्न समस्याओं पर नियंत्रण रखे।

हिन्द महासागर के तटीय क्षेत्र निचले स्तर पर बसावट से भरपूर है। भौगोलिक दुर्घटनाओं जैसे समुद्री तुफान से जन–माल की हानि की संभावना बनी रहती है। विशेषकर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से ऐसी दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्धि हुई है और अमेरिका अपने नौ सैनिक बेडे के माध्यम से ऐसी स्थिति में मानवतावादी हस्तक्षेप करता रहा है। इन बातों के अलावा हिन्द महासागर का महत्व अमेरिका की दृष्टि में उतना नही है जितना की प्रशान्त महासागर का है क्योकि प्रशान्त महासागर अमेरिका के पश्चिमी तट से जुड़ा हुआ है जो उसको महत्वपूर्ण आर्थिक एवं सामरिक शक्तियों से संबंधित करता है। हिन्द महासागर में अमेरिकी नौ सैनिक बेडा तीन संयुक्त सेनाओं से संबंधित है जो इस प्रकार है– 1. पैकम– यानि फैसिपीक कमाण्ड़, जिसमे चीन सम्मिलित है ,जो भारत तक विस्तरित है तथा जो हिन्द महासागर के केन्द्रय एवं पूर्वी भागों के प्रति उतरदायी है तथा किसी समय इस पूरे समुद्र की देखभाल करना इसका दायित्व था। 2. सैन्ट्रल कमाण्ड़(सैन्ड कॉम)– व 3. अफ्रीका कमाण्ड़ (एफ्रीकॉम,जो 2008 में एक अलग कमाण्ड़ के रूप में स्थापित हुआ)–इसका उत्तरदायित्व पश्चिमी हिन्द महासागर की रक्षा करना है। सैन्ट कॉम बहरीन में स्थित है और इसने अफगानीस्तान और ईराक में संयुक्त मोर्चे की सहायता की है तथा यमन जैसे देशों में प्रति–आतंकवाद की कार्यवाही की है। अफ्रीकॉम हॉर्न ऑफ अफ्रीका के लिए काम करता है और अदन की खाड़ी के समुख जिबूती में स्थित है तथा यह हिन्द महासागर और ईरान की खाड़ी में अमेरिकी फौजो को सहायता प्रस्तुत करता है। इस प्रकार की संगठनात्मक संरचना हिन्द महासागर में अमेरिकी दखल को सीमित करती है क्योकि यहाँ पर प्रशान्त महासागर की तरह एकीकृत यू एस सैनिक कमाण्ड़ नही है जो पूरे हिन्द महासागर में सभी गतिविधियों का समन्वय कर सके।

होर्मुज की खाड़ी का विशेष महत्व है क्योकि यह दुनिया के तेल का 20: निकास इसी रास्ते से होता है। पश्चिमी हिन्द महासागर में समुद्री लुटेरों एवं आतंकवाद का खतरा हमेशा बना रहता है इसलिए समय–समय पर अमेरिकी नौ सेना अन्तरराष्ट्रीय या बहुतराष्ट्रीय अभ्यास करती रहती है। पश्चिम की तुलना में केन्द्रीय एवं पूर्वी भाग में अमेरिका इतनी रूचि नही लेता। हालांकि वह हिन्द महासागर के इन क्षेत्रों में सैनिक अभ्यास करता है और समुद्री रास्तों में रूकावट न पैदा हो इसका ध्यान रखता है तथा आतंकवादी घटनाओं ,गैर कानूनी आवागमन ,हथियारों के आयात–निर्यात एवं प्राकृतिक दुर्घटनाओं में सहायता प्रदान करता है। विशेष रूप से बंगाल की खाड़ी में । बंगाल की खाड़ी के किनारे जनसंख्या का दबाव बहुत है इसलिए प्राकृतिक दुर्घटनाओं का अत्यधिक प्रभाव इन पर पड़ता है जिससे राजनीतिक अस्थिरता पैदा होने की भी संभावना होती है । अमेरिका ने ऐसी प्राकृतिक आपदाओं जैसे 2004 की सुनामी में मानवतावादी कार्य किया है। फैसिपीक कमाण्ड़ हिन्द महासागर की अपेक्षा प्रशान्त महासागर पर अधिक ध्यान देती है। इसका कारण यह है कि वहाँ पर पूर्वी चीन और दक्षिणी चीन समुद्रों के क्षेत्र. संबंधी विवाद ,कोरिया क्षेत्र की अस्थिरता तथा चीन द्वारा अपने समुद्री क्षेत्र में घुसने नही देने की चेतावनी इत्यादि समस्या बनी हुई है। अमेरिका द्वारा डी–आगो गार्सीया में नौ सैनिक अड्डा होने पर भी उसकी पहुँच सैनिक दृष्टि से हिन्द महासागर के केन्द्र एवं पूर्व में इतनी नही है जितनी की प्रशान्त महासागर में है। यह माना जाता है कि अमेरिका अपने आप को एक प्रशान्त महासागरीय शक्ति प्रदर्शित करना चाहता है न कि हिन्द महासागरीय शक्ति । इसका अर्थ यह नही है कि अमेरिका हिन्द महासागर में केन्द्रीय एवं पूर्वी क्षेत्र की उपेक्षा करता है। यर्थात् में इस क्षेत्र से निर्बाध नौ परिवहन अमेरिका को वैश्विक शक्ति बनाये रखने में सहायता करता है । अमेरिका यह मानता है कि वह अन्तरराष्ट्रीय व्यापार ,नौ सैनिक सुरक्षा एवं नौ परिवहन सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है तथा इसके माध्यम से विश्व में वह शक्ति बनाये रखना चाहता है।

पिछले कुछ वर्षो से भारत के बढ़ते हुये वैश्विक महत्व ने हिन्द महासागर का महत्व भी बढ़ाया है। इसलिए अमेरिकन सुरक्षा शब्दावली में एशिया फैसिपीक के साथ–साथ इण्ड़ो एशिया फैसिपीक शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। हाल ही में अमेरिका के सुरक्षा रणनीतिकार जहाँ अन्य देश जैसे अफगानीस्तान ,ईराक,ईरान,चीन,उतरी कोरिया इत्यादि को संकट एवं संघर्ष के संदर्भ में रेखांकित करते है। वही भारत को एक लम्बे समय के लिए सामरिक मित्रता बनाने के लिए उपयुक्त राष्ट्र मानते है। वो यह भी मानते है कि भारत आने वाले समय में सुरक्षा वातावरण को बनाने में एक महत्वपूर्ण हिस्सेदार की भूमिका अदा करेग और इस कारण भारत व अमेरिका अपने सहयोग को बनाये रखने तथा उसमें वृद्धि करेगें जिससे की एशिया फैसिपीक क्षेत्र में शान्ति बनी रह सके। पिछले दशक में चीन ने हिन्द महासागर क्षेत्र में सुरक्षा एवं निवेश की गतिविधियाँ

बढ़ा दी है और उसे ऐसा लगता है कि चीन अब चीनी समुद्र के साथ–साथ हिन्द महासागर में भी अपना हस्तक्षेप बढ़ाना चाहता है।

ऐसा भी माना जाता है कि चूंकि भारत ,चीन के जमीनी संबंध मधुर नही है इसलिए चीन भारत पर प्रभाव बढ़ाने के लिए भारत की समुद्री क्षेत्र पर अपना नियंत्रण करना चाहता है। जब–जब भारत और चीन के मध्य सीमाओं पर छुट–पुट घटनाएँ होती है तो समुद्री क्षेत्र में तनाव बढ़ जाता है। इसलिए भारत निरन्तर मालद्वीव,श्रीलंका,म्यांमार,मॉरीसस,मेडागास्कर ,ओमान जैसे देशों से सुरक्षा संबंधित संयुक्त कार्यवाही करता है।

निष्कर्श

वैश्विकरण के दौर में चीन हिन्द महासागर में अपनी दखल बनाये रखना चाहता है। उसे यहाँ से यूरोप,अफ्रीका एवं मध्य–पूर्व से संबंध में हिन्द महासागर के रास्ते की आवश्यकता है। चीन आर्थिक कारणों से हिन्द महासागर में बिना रूकावट के परिवहन की व्यवस्था चाहता है। वहीं भारत उभरते हुये विश्वशक्ति के रूप हिन्द महासागर पर अपना प्रभाव बनाये रखना चाहता है। वर्तमान में सैनिक दृष्टि से अमेरिका की उपस्थिति सबसे शक्तिशाली है। भारत धीरे–धीरे अपनी नौ सैनिक शक्ति बढ़ा रहा लेकिन वह सावधानीपूर्वक सभी देशों से मित्रता के व्यवहार से अपनी शक्ति को अन्य देशों द्वारा स्वीकार कराने का प्रयास कर रहा है वही श्रीलंका भी इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

हेरी हार्डिंग ,द इवोल्यूशन ऑफ द स्ट्रैटजिक ट्राइएंगल : चाइना इंडिया एण्ड यूनाइटेड स्टेट्स ," इन फ्रैंसिन आर फ्रेंकेल एण्ड हेरी हार्डिंग ,ईडीस्स,द इण्डिया–चाइना रिलेशनशिप : राइवेलरी एण्ड इंगेजमेंट,ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटि प्रेस,नई दिल्ली,2004,पृष्ठ संख्या 321–50

उपरोक्त

रॉबर्ट डी कैप्लॉन," मॉनसून : द इण्डियन ओसन एण्ड द फ्यूचर ऑफ अमेरिकन पॉवर,रेण्डम हाउस ,न्यूयॉर्क, 2011,पृष्ठ संख्या 9–16

राहुल सिंह ,"चाइनाज सबमरींस इन इण्डियन ओसन वरी इण्डियन नेवी",हिन्तुस्तान टाइम्स,7 अप्रैल,2013

जहु क्यूइपिंग यिन्दु यंग यू जहोंगगुओ (इण्डियन ओसन एण्ड चाइना) (बिजिंग सोसल सांइस एकेडमिक प्रैस 2014) डेविड ब्रेवेस्टर,सिल्क रोड़ एण्ड स्ट्रींग ऑफ पर्लस : द स्ट्रेटजिक जियोग्राफी ऑफ चाइनाज न्यू पाथ वे इन द इण्डियन ओसन,जिओ पॉलिटिक्स(2016)

शिएटगी बाजपेयी,"फेक्टर्स फ्यूलिंग चाइनाज एक्सेपेंडिग मेरिटाइम ओपरे''न्स," जुलाई 2012

जॉन हार्नेट "द पॉवर ट्राइएंगल इन द इण्डियन ओसन : चाइना इण्डिया एण्ड द यूनाइटेड स्टेट्स",कैम्ब्रिज रिव्यू ऑफ इन्टरने''नल अफेयर्स 29,न.2(जून 2016) : पृष्ठ संख्या 425–43

सी राजामोहन,"इण्डियन न्यूरोल इन द इण्डियन ओसन," सेमिनार,जनवरी 2011,एचटीटीपी:/ /डब्लूडब्लूडब्लू. इण्डिया.सेमिनारकॉम/2011/617/617ऋसीऋराजाऋमोहन

वेन डाओ,"इण्डिया,चाइना मस्ट नोट फाल इन टू ट्रेप ऑफ राइवलरी सेट बाय द बेस्ट",ग्लोबल टाइम्स,26 जनवरी 2015

राजामोहनसी,समुद्र मन्थन : साइनो–इण्डियन राइवलरी इन द इण्डो–पेसिफि , कारनेगी एण्डोमेण्ट फॉर इन्टरनेशनल पीस,वांशिगटन,2012

क्षिप्रा भार्मा

व्याख्याता ,राजनीति विज्ञान, कानोडिया पी जी महिला महाविद्यालय ,जयपुर.